20

अंतिम दिन

मत्ती 26:45-27:66 और समानान्तर पद

परिचायक। –कई बार लगता है कि हम मसीह के जीवन की तुलना में उसकी मृत्यु को अधिक महत्व देते हैं। हो भी सकता है। हो सकता है कि कठोर तकनीकी ढंग से इस पर निर्भर रहकर हम क्रूस को पिता के प्रेम और यीशु के जीवन के स्वाभाविक चरम बनाने में नाकाम रहें। फिर भी एक सुझावात्मक तथ्य यह है कि बाइबल में किसी और दिन के काम काज को इतने विस्तार से नहीं लिखा गया। यदि यीशु के तीस से अधिक वर्ष के पूरे जीवन को विस्तार से लिखा जाता तो नये नियम जितनी बड़ी चार सौ किताबें बन जातीं।

1. पकड़वाया जाना। –यीशु के प्रार्थना करते समय तीन चेले सो गए थे। पर यहूदा नहीं सोया था। वह अपनी योजनाओं को अंजाम देने में व्यस्त था। प्रार्थना से उठकर यीशु चेलों के पास लौट आया, यहूदा हथियारों और मशालों से लैस सिपाहियों के एक दल के साथ बाग में आ गया। ऐसा नहीं कि इन लोगों को यीशु की पहचान नहीं होगी; परन्तु किसी प्रकार की गलती न होने देने के लिए यहूदा ने उन्हें एक चिह्न दिया था कि जिसे वह चूमे वही यीशु होगा और सीधे यीशु के पास जाकर उसने, ''हे रब्बी नमस्कार,''[1] कहकर उसे चूमा। गलील के प्रसिद्ध भविष्यवक्ता को देखकर भाड़े पर लाए गए लोग पहले तो पीछे को गिर गए; परन्तु अंत में साहस करके उन्होंने यीशु को पकड़ लिया और उसे बांधकर ले गए। पतरस से यह सब सहा न गया और क्रोध में आकर उसने अपनी तलवार से महायाजक के सेवक का कान काट दिया। परन्तु मित्र की हों या शत्रु की तलवारें उसकी ज़रूरत नहीं थी। यदि वह चाहता तो आज्ञा दे सकता था और उसके शत्रु उसकी सामर्थ के सामने टिक न पाते; और उसके अपने ठहराए हुए उद्देश्य और यहूदियों की घृणा के विरुद्ध उसके मित्र कुछ न कर पाए। ईश्वरीय प्रेम और दुष्टता की घृणा, परमेश्वर के महान उद्देश्य, और मनुष्यों के निकज़मे उद्देश्य क्रूस के इर्द-गिर्द मिल जाते हैं।

2. मुकदमे की सुनवाइयां। –रोमियों ने दूसरे सब लोगों की तरह जिन्हें उन्होंने पराजित किया होता था, यहूदियों को काफी छूट दे रखी थी। यदि वे शांति बनाए रखते और कर अदा करते रहते, तो उन्हें स्थानीय मामलों को अपने ढंग से निपटाने का अधिकार था। परन्तु उनकी कौमी सभा किसी कैदी को मृत्यु के *योग्य* ठहराने पर मृत्यु दण्ड देना रोमी न्यायालय के हाथ में ही था। इस प्रकार यीशु के मुकदमे की दो अलग-अलग सुनवाइयां अर्थात एक यहूदियों या धर्मगुरुओं के सामने और दूसरी रोमी या सरकारी सुनवाई थी। हर सुनवाई तीन चरणों में हुई।

क. यहूदी या धर्म गुरुओं के सामने सुनवाई। –(1) पहला चरण हन्ना के सामने आरज़्भिक जांच थी। हन्ना कई साल तक महायाजक रहा था, और अभी भी यहूदी लोग *de jure* अर्थात कार्यकारी महायाजक उसे ही मानते थे। वह बुजुर्ग हो गया था और बहुत प्रभाव वाला आदमी था। कुछ प्रश्न पूछने के बाद हन्ना ने यीशु को कैफा के पास भेज दिया; परन्तु उसके व्यज़्तित्व पर पहला क्रूर *प्रहार* होने के बाद। (2) दूसरा चरण कैफा के सामने था और यह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। कैफा हन्ना का दामाद और *de facto* अर्थात वास्तविक महायाजक था, जिस कारण वह महासभा का प्रधान था। महासभा की सूर्य उदय होने से पहले होने वाली कोई भी सभा अवैध थी; परन्तु अगुवे व्यावहारिक तौर पर लोगों के भड़क जाने से पहले यीशु पर आरोप सिद्ध करना चाहते थे। दिखाने में युज़्तिपूर्ण किन्तु कपटपूर्ण आरोप लगाना कठिन था। कई झूठे गवाह लाए गए, परन्तु उनकी गवाही आपस में मेल नहीं खाती थी, और यीशु ने इस दौरान अपना मुंह बिल्कुल नहीं खोला। कैफा द्वारा उसे स्वयं मार देने की ठान लेने पर अभियोजन के खटाई में पड़ जाने का खतरा बढ़ गया। ''ज़्या तू परम धन्य का पुत्र मसीह है ?''[2] यीशु अभी तक तो चुप था। पर *इस* प्रश्न पर वह चुप न रह पाया और उसने उज़र दिया, ''हां मैं हूं।''[3] ''इसने परमेश्वर की निन्दा की है,'' कैफा चिल्लाया। ''वह वध के योग्य है,''[4] खरीदे हुए न्यायी पुकारने लगे। यीशु को आधी रात के बाद ही गिरज़्तार किया गया होगा। सूर्य उदय होने में अभी कुछ समय है और महासभा की पूरी सभा से पहले का अन्तराल विरोध न करने वाले उस बंदी के साथ भद्दे ढंग से ठट्ठों में बीता था। (3) सारी सभा के सामने तीसरा चरण पहले से लिए गए निर्णय की औपचारिक मंजूरी ही थी।

प्रारज़्भिक चरणों के दौरान ही कहीं पतरस गिरा। वह यूहन्ना के साथ किसी न किसी तरह अपने प्रभु के निकट आकर सारी कार्यवाही को देख रहा था। दृश्य भयानक था जिसमें पतरस ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से एक के बाद एक व्यज़्ति द्वारा गलीली कहे जाने पर तीन बार अपने प्रभु का इन्कार किया और वह भी शपथ खाकर। बेचारा पतरस! परन्तु उसका खोना *आशाहीन* नहीं था। मुर्गे का बांग देना, यीशु की भविष्यवाणी को याद करना और उसकी अपनी शेखी यीशु द्वारा कचहरी से कैफा के महल तक जाने के समय उदास और शांत होकर उसे देखना, उसके अच्छा व्यज़्ति होने का स्मरण कराता है; ''और बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगा।''[5]

दूसरी ओर इससे भी परेशान करने वाला और भयानक दृश्य था। यहूदा भी, हर कार्यवाही पर नज़र रखे हुए था। हो सकता है कि उसे आशा हो कि यीशु बंधनों को तोड़कर अपनी महिमा को प्रकट करेगा। प्रभु को किसी तरह की हानि नहीं होगी, जबकि वह स्वयं तीस शेकेल लेकर धनी हो जाएगा। परन्तु यहूदियों के सामने मुकदमे की तीन सुनवाइयां हो गईं। यीशु को मृत्युदण्ड का दोषी ठहराया जाता है। केवल पिलातुस की ओर से ही दण्ड मिलना बाकी है। यहूदा पछतावे में पड़ जाता है। चांदी के वे तीस सिज़्के उसके मन में आग लगा रहे हैं। सभा के सामने जाकर वह उन सिज़्कों को यह कहते हुए फैंक देता है: ''मैंने निर्दोष को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है।''[6] ''हमें ज़्या? तू ही जान'' रूखा सा

जवाब मिलता है। देशद्रोही को हमेशा वे लोग ठुकरा देते हैं जो उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। और बाहर जाकर उसने फंदा लगा लिया (*तु.* मत्ती 27:5; प्रेरितों 1:18, 19)। तो भी, उसने यीशु के पास जाकर उसके कदमों में गिरकर उसकी क्षमा की आशीष ज़्यों नहीं पाई। पछतावे और मन फिराव में यही तो अन्तर है। यहूदा तो केवल पछताया ही लेकिन पतरस ने मन भी फिराया।

ख. रोमी या सार्वजनिक सुनवाई।–इसमें भी, तीन चरण थे (1) पिलातुस के सामने। पिलातुस का पहला प्रश्न था: ''आरोप ज़्या है?'' परमेश्वर की निन्दा का यहूदियों का आरोप, जिसके आधार पर *उन्होंने* उसे दोषी ठहराया था, रोमी न्यायालय में किसी काम का नहीं था। उन्होंने पहले झूठे आरोपों के आधार पर उसे पिलातुस से दण्ड दिलवाना चाहा; परन्तु पिलातुस एक रोमी व्यक्ति द्वारा न्याय करने की समझ से स्पष्ट आरोप बताने को कहता है ''हमने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और अपने आप को मसीह राजा कहते हुए सुना है।''[17] पहला आरोप झूठा था और पिलातुस शीघ्र ही समझ गया कि यीशु ने किसी खतरनाक राजनैतिक अर्थ में राजा होने का दावा नहीं किया था, जिस कारण उसने उसे निर्दोष घोषित कर दिया। वे हार मानने वाले कहां थे, उन्होंने चौथा आरोप जड़ दिया कि इसने गलील से लेकर यरूशलेम तक सब लोगों को भड़काया है। पिलातुस दुविधा में पड़ गया। वह किसी निर्दोष व्यक्ति को दण्ड नहीं देना चाहता था और यहूदियों को नाराज़ भी नहीं करना चाहता था। परन्तु उसने गलील शब्द को ध्यान में रखा। यह तो हेरोदेस का इलाका था और हेरोदेस नगर में ही था; दोनों हाकिमों में शत्रुता थी; हेरोदेस के प्रति शिष्टाचार दिखाने और कलह मिटाने के लिए, और झगड़े और खतरे से निजात पाने के लिए इससे अच्छा अवसर और नहीं था। सो पितालुस ने यीशु को हेरोदेस के पास भेज दिया। (2) हेरोदेस के सामने। हेरोदेस किसी आश्चर्यकर्म को देखने के लिए यीशु से मिलने को व्याकुल था। परन्तु सूअरों के आगे मोती न डालने की अपनी शिक्षा पर अमल करते हुए, यीशु ने हेरोदेस के प्रश्नों का कोई उज़र नहीं दिया। फिर दूसरा ठट्ठा हुआ। बुरी तरह से विफल होकर हेरोदेस और उसके क्रूर सिपाहियों ने यीशु को एक पुरानी राजसी पोषाक पहनाकर उसे वापस पिलातुस के पास भेज दिया। (3) दोबारा पिलातुस के सामने। अब तक भीड़ में फसह के समय एक कैदी को छोड़ने की मांग ज़ोर पकड़ने लगी थी। पिलातुस ने तुरन्त यीशु को छोड़ने का प्रस्ताव रखा। परन्तु याजक तो लोगों के साथ व्यस्त थे। विजयी जुलूस के आगे नगर में आने वाला यीशु और, महासज़ा द्वारा दोषी ठहराया गया, पिलातुस के दण्ड की प्रतीक्षा कर रहा यीशु दो व्यक्ति हैं। ''इसे नहीं परन्तु हमारे लिए बरअज़्बा को छोड़ दे; और बरअज़्बा डाकू था।''[18] पिलातुस ने भीड़ के साथ और अपने विवेक के साथ काफी संघर्ष करने के बाद हार मानकर यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दे दी। इस दौरान पिलातुस के सिपाहियों ने उसे एक बैंजनी वस्त्र पहनाकर, हाथों में एक काना पकड़ाकर और उसके सिर पर कांटों का एक मुकुट उसके सिर पर ठोककर उसका ठट्ठा उड़ाया।

इस प्रकार छह तरह का मुकदमा समाप्त हो जाता है, जिसमें यीशु के सर्वोच्च पौरुष के साथ अनन्त विरोध में धोखा और कपट, कायरता और स्वार्थी नीति और खतरनाक नृशंसता

खड़े हैं। ठट्ठे में शाही पोशाक पहने भीड़ के ताने और अपमान सहते हुए भी वह किसी हेरोदेस के सिंहासन पर बैठे या कैसर का मुकुट पहने किसी भी राजा से हजार-गुणा बढ़कर था।

3. क्रूसारोहण। -*क. समय व स्थान।* -सुबह नौ बजे का समय था जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दी गई। यीशु को नगर से बाहर एक स्थान पर ले जाया गया (इब्रा. 13:12), जिसे इब्रानी भाषा में, गुलगुता; यूनानी में, क्रेनियोन; लातीनी में कलवरियुम (अर्थात कलवरी) कहा जाता है, सबका अर्थ खोपड़ी है। यह सम्भवत: नगर के उत्तर पश्चिम में खोपड़ी के आकार की छोटी पहाड़ी थी।

ख. मार्ग में। -यीशु अपना क्रूस उठाकर चल दिया; परन्तु गुलगुता पहुंचने से पहले, सिपाहियों ने एक कुरेनी युवक को पकड़कर उस पर क्रूस रख दिया; शायद इसलिए क्योंकि रात की मार और सुबह के कष्टों से चूर यीशु में इतना बोझ सहने की क्षमता नहीं रही थी। अंधकार की उस घड़ी में भी कोई ऐसा था जो उसकी मृत्यु पर अफसोस कर रहा था। अपमान सहते हुए इतनी देर से चुप होंठ अब करूणा से भर आए, उनका यह तरस अपने आप पर नहीं बल्कि उनके लिए था जिन्होंने शीघ्र ही यरूशलेम पर आने वाले विनाश के द्वारा सताया जाना था।

ग. *क्रूस पर।* -उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर चढ़ाए गए थे। क्रूस पर चढ़ाना निम्नस्तर के अपराधियों को मृत्यु दण्ड देने का एक रोमी ढंग था। तरस करके इस्राएल की स्त्रियों को ऐसे अवसरों के लिए विस्मित कर देने वाला पेय तैयार किया करती थीं। यीशु को क्रूस पर ऐसा ही पेय प्रस्तुत किया गया था, परन्तु उसने पीड़ा कम कर सकने वाली शक्ति पाने से इनकार कर दिया।

घ. क्रूस से सात वचन। -यीशु के क्रूस से बोले गए सात वचन लिखित रूप में मिलते हैं: (1) इनमें से पहला सम्भवत: इसी क्षण में बोला गया था। पहले देह को क्रूस पर कील से ठोंका जाता था, और फिर क्रूस को जमीन में गाड़कर खड़ा कर दिया जाता था। ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं''[9]; उन निर्दयी सिपाहियों के लिए कहा गया था जो कुछ देर बाद यीशु की वस्तुओं पर जुआ खेलने के लिए बैठ गए थे। दण्ड पाने वालों के ऊपर लिखने के लिए पिलातुस ने कई आरोप पत्र तैयार कर रखे थे। यीशु के लिए इब्रानी, यूनानी और लातीनी भाषा में आरोप पत्र तैयार किया गया था ''यीशु नासरी यहूदियों का राजा।''[10] जिसका अर्थ पिलातुस द्वारा निकाला गया और यहूदियों को लगा कि यह उन पर जबरदस्ती से थोपा गया: उन्होंने विरोध किया, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। (2) यीशु की माता और दो दूसरी मरियमें यूहन्ना के साथ क्रूस के पास खड़ी थीं। अपनी मां और यूहन्ना को सम्बोधित करते हुए उसने दूसरा वचन कहा: ''देख यह तेरा पुत्र है; यह तेरी माता है''[11]; उसे अभी भी अपनी नहीं बल्कि दूसरों की चिंता है। (3) और अब निर्बलता पर अपनी ईर्ष्या दिखाने वाली शक्ति का घिनौना प्रदर्शन शुरू होता है। महायाजक और ग्रंथी और हाकिम, देश के सरदार सब ठट्ठे उड़ाने के इस दृश्य में भीड़ के साथ मिल गए। ''इसने औरों को बचाया, ... अपने आप को बचा ले''[12]; यह सच्चाई उनकी कल्पना से परे थी: क्योंकि यदि वह अपने आप को नहीं बचा सकता, तो दूसरों को कैसे बचा *सकता* है ? क्रूस

पर चढ़े डाकू भी, व्यंग्य करने वालों में मिल गए थे; परन्तु जब एक ने निर्दोष के दुख सहने पर अफसोस जताया और बीच वाले क्रूस की ओर ध्यान करके कहा, ''जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना''[13] तो दूसरे का मन भी पिघल गया। अंत तक अपने नाम और उद्देश्य में दृढ़ रहने वाला यीशु क्रूस से अंतिम वचन कहता है, ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''[14] (4) फिर, बारह से तीन बजे तक, तीन घण्टे अंधेरा और चुप्पी छा गई। शाम की कुर्बानी के समय अंधेरे और क्रूस से, अधीर होंठों से पहली और अंतिम शिकायत स्वर्ग में जाती है, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे ज़्यों छोड़ दिया?''[15] इसके बाद धीरे से बाकी शब्द निकलते हैं: (5) ''मैं प्यासा हूं,''[16] जो उसकी शारीरिक पीड़ा की पहली और अंतिम अभिव्यक्ति थी। भय से कठोर मन कोमल बन गए थे जिस कारण यीशु को ठण्डक दिलाने वाला सिरका दिया जाता है। वह एक बार फिर बोलता है: (6) ''पूरा हुआ''[17]; पूरा हुआ का अर्थ पृथ्वी पर रहने वाले सबसे भले व्यक्ति का अंत नहीं था बल्कि पूरा हुआ का अर्थ मनुष्य के छुटकारे के काम का पूरा होना था; पूरा हुआ का अर्थ ... पुरखाओं और भविष्यवक्ताओं के द्वारा देखे गए स्वप्न से भी अधिक और शानदार अर्थ पुरानी वाचा के प्रतिरूपों तथा प्रतीकों और भविष्यवाणियों से अधिक अच्छे ढंग से पूरा हुआ। (7) फिर, क्रूस से सातवीं और अंतिम बार कहकर, उसने सिर झुकाकर प्राण दे दिया: ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं।''[18]

ङ. *पुरानी वाचा का अंत।*–मरते हुए उसकी पुकार के क्षण में देश में एक भूकंप का झटका महसूस किया गया। मन्दिर का पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक फटकर दो भाग हो गया; ज़्योंकि यीशु के क्रूस ने पुरानी वाचा को इसकी विधियों सहित मिटा दिया था (कुलु. 2:14)। लोग भयभीत हो गए। रोमी सूबेदार भी कह उठा, ''सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।''[19]

4. गाड़ा जाना। –क्रूसारोहण का अगला दिन विशेष सब्त का दिन था। यहूदी लोग हत्या कर सकते थे; परन्तु वे सब्त की रीति को दूषित नहीं कर सकते थे। सूर्य ढलने के बाद लाशें क्रूस पर नहीं रहनी चाहिए थीं। जल्दी मारने के लिए उनकी टांगें तोड़ी गईं; परन्तु यीशु की मृत्यु तो पहले ही हो चुकी थी, जैसा कि सिपाही द्वारा उसकी पसली में मारे गए भाले से निकले पदार्थ से पता चलता है। इस प्रकार अचेतन ही दो भविष्यवाणियां पूरी हुईं (भ.स. 34:20; 22:16, 17)। यीशु की लोथ उसके दो चेलों अरमितियाह के यूसुफ और निकुदेमुस को दी गई; उन्होंने बड़े प्रेम से इसे यूसुफ की नई कब्र में गाड़ने के लिए तैयार किया; और भयभीत यहूदियों के आग्रह पर रोमी मुहर लगाकर रोमी रखवालों का पहरा बिठाकर उस कब्र की रक्षा की गई।

पाद टिप्पणियां

[1]मत्ती 26:49; देखिए मरकुस 14:45; लूका 22:47. [2]मरकुस 14:61; मत्ती 26:63; लूका 22:67 भी देखिए। [3]मरकुस 14:62; मत्ती 26:64 भी देखिए। [4]मत्ती 26:66; मरकुस 14:64 भी देखिए। [5]मत्ती 26:75. [6]मत्ती 27:4. [7]लूका 23:2. [8]यूहन्ना 18:40; मत्ती 27:20 भी देखिए; मरकुस 15:11; लूका 23:18. [9]लूका 23:34. [10]यूहन्ना 19:19; मत्ती 27:37 भी देखिए; मरकुस 15:26; लूका 23:38. [11]यूहन्ना 19:26, 27. [12]मत्ती 27:42; मरकुस 15:31; लूका 23:35. [13]लूका 23:42. [14]लूका 23:43. [15]मत्ती 27:46; मरकुस 14:34. [16]यूहन्ना 19:28. [17]यूहन्ना 19:30. [18]लूका 23:46. [19]मत्ती 27:54; मरकुस 15:39.